Lecture Series No:- 49

Online Class
Date - 7/2/2022,
Time - 10:30 AM

Topic,

(1.) Arhat

Dr. Surita Kumari
Department of Philosophy,
B.A Part. II
Paper — (5.)
A.N.D. College Shahpur patory,
Samastipur,

Ans ⇒ हिन्दी

जीवन दर्शन में 'अर्थ' को दूसरा पुरुषार्थ माना गया है। अर्थ का शाब्दिक अर्थ है वस्तु या पदार्थ। इसमें सभी भौतिक वस्तुओं को सम्मिलित किया जा सकता है। वे सभी चीजें, जिन्हें हम अपने अधिकार-क्षेत्र के अन्तर्गत रखते हैं अर्थ के अन्तर्गत आती है। इसके प्रयोग से हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं। अर्थ में केवल मुद्रा ही नहीं आती बल्कि वे सभी चीजें आती हैं जिनसे भौतिक सुख प्राप्त होता है। महाभारत में लिखा है कि धर्म का पालन अर्थ पर निर्भर करता है। जिसके पास अर्थ नहीं वह

P.T.O.

अपने कर्तव्यों को ठीक ढंग से पालन नहीं कर सकता है। कौटिल्य का कथन है कि विभिन्न प्रकार के दान तथा इच्छा की पूर्ति सभी अर्थ पर आश्रित है।' वैदिक साहित्य में भी अर्थ की महत्ता को स्वीकार किया गया है, उपनिषदों में अर्थ की वृद्धि के लिए प्रार्थना की गई है। दरिद्रता पापपूर्ण दशा है, अतएव इसका निवारण आवश्यक है।

महाभारत के अनुसार, सम्पति से ही धार्मिक कार्य, आनन्द, वासना, साहस, क्रोध, विद्या उत्पन्न होते हैं। जिस व्यक्ति के पास धन नहीं वह धार्मिक कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता etc.।

"END"